आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 29-03-2016 ● अंक-478 ● तारीख - 30 मार्च 2016, चैत्र कृष्ण - 6 ● बुधवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

श्री सत्यसांई -अनमोल वचन

शुरुआत में भगवान दूर से आपके प्रयासों को देखते हैं। फिर, जब आप अपने लगाव के बहाने आनंद और अच्छे कामों और सेवा में लग जाते हैं, परमेश्वर पास आकर प्रोत्साहित करता है। उसके लिए भगवान सूर्य की तरह होता है, जो बंद दरवाजे के बाहर इंतजार कर रहा है।

सत्संग

सभी को अपनी निन्दा बुरी लगती है, प्रशंसा अच्छी। विचार करें निन्दा करने वाला दूसरा है, उस पर हमारा वश नहीं चलता, उसे हम रोक नहीं सकते। उससे द्वेष करने में, उसे बुरा समझने में हमारा लाभ नहीं है। निन्दा करने वाला हमारे पापों का नाश करता है।

जो किसी को दुःख नहीं देता, उसके द्वारा दूसरों की सेवा शुरू हो गयी। जो किसी को दुःख नहीं देता, उसको देखने से पुण्य मिलता है।

तन कर मन कर वचन कर, देत न काहू दुःख।
तुलसी पातक हरत है, देखत उनको मुख।।

अन्न, जल और वस्त्र देने में सुपात्र–कुपात्र का विचार करोगे तो खुद कुपात्र बन जाओगे। पापी को उतना अन्न दो, जिससे वह जी जाय। धन, कन्या आदि देने में सुपात्र देखना चाहिये।

सुविचार

जीतने वाले अलग चीजें नहीं करते, वो चीजों को अलग तरह से करते हैं। **–शिव खेड़ा**

जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की, उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की।

– अल्बर्ट आइंस्टीन

हर एक चीज में खूबसूरती होती है, लेकिन हर कोई उसे नहीं देख पाता। **–कन्फ्यूशियस**

भगवान ने मनुष्य को अपने समान ही बनाया, पर दुर्भाग्य से इन्सान ने भगवान को अपने जैसा बना डाला ।

–महात्मा गाँधी

2016–17 में स्मार्टफोन की बिक्री में होगी 60 फीसदी की बढ़ोतरी

कैमरा और इंटरनेट से लैस सस्ते स्मार्टफोन्स की 2016–17 के दौरान 16 करोड़ तक बिक्री होने की उम्मीद है. जबकि साल 2015–16 के दौरान यह आंकड़ा 10 करोड़ था. एसोचैम द्वारा किए गए रिसर्च से यह खुलासा हुआ है। फोटोग्राफी के शौकीन लोगों के बीच जहां स्मार्टफोन की मांग बढ़ रही है, वहीं इसकी वजह से डिजिटल कैमरे की बिक्री लगातार घट रही है. इस स्टडी में कहा गया है कि पिछले साल डिजिटल कैमरों की बिक्री में 35 फीसदी कमी देखी गई।

एसोचैम के सचिव डी. एस. रावत ने बताया, टेक्नॉलोजी इतनी जल्दी बदल रही है कि इसे डेवलप करने वालों को समय से आगे सोचने की जरूरत है. ऐसा नहीं हुआ तो आज जो चीज सबसे ज्यादा बिक रही है वह जल्दी ही चलन से बाहर हो सकती है। उन्होंने कहा कि देश में स्मार्टफोन की मांग पिछले एक साल में तेजी से बढ़ी है और इसका एक कारण सोशल नेटवर्किंग साइट्स में आई बढ़ोतरी है. रावत के मुताबिक देश के ज्यादातर युवा ऑनलाइन तस्वीरें शेयर करते हैं. यह मेट्रो शहरों में नया चलन है जिसके कारण स्मार्टफोन की जरूरत बढ़ रही है। इस स्टडी में कहा गया है कि 2013 में कुल 4.4 करोड़ स्मार्टफोन बिके थे, जो 2016 में बढ़कर दोगुने से ज्यादा 10 करोड़ हो गए. अब 2017 में 16 करोड़ स्मार्टफोन की बिक्री होने की उम्मीद है।

भारतीय समाजवाद के पितामह आचार्य नरेंद्र देव

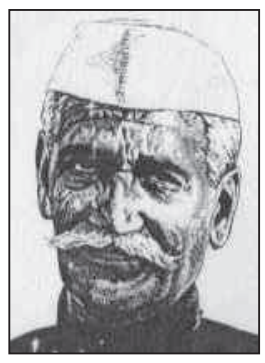

''समाजवाद का ध्येय वर्गहीन समाज की स्थापना है। समाजवाद प्रचलित समाज का इस प्रकार का संगठन करना चाहता है कि वर्तमान परस्पर विरोधी स्वार्थ वाले शोषक और शोषित, पीड़क और पीड़ित वर्गों का अंत हो जाएय वह सहयोग के आधार पर संगठित व्यक्तियों का ऐसा समूह बन जाए जिसमें एक सदस्य की उन्नति का अर्थ स्वभावतः दूसरे सदस्य की उन्नति हो और सबमिल कर सामूहिक रूप से परस्पर उन्नति करते हुए जीवन व्यतीत करें।''

आचार्य जी का जन्म आज के दिन 1889 में यूपी के सीतापुर शहर में हुआ था जहां उनके पिता बलदेव दास वकालत करते थे। उनके पूर्वज स्यालकोट से उत्तर प्रदेष आकर बसे थे। फैजाबाद में उनके दादा कुंजबिहारी लाल का बर्तनों का व्यापार था। आचार्य जी के जन्म के दो साल बाद दादा का निधन होने पर उनके पिता सीतापुर से फैजाबाद आ गए और वहीं वकालत करने लगे।

आचार्य जी का असली नाम अविनाशी लाल था। बाद में संस्कृत के विद्वान माधव मिश्र ने उनका नाम नरेंद्र देव रखा। उनकी स्कूली शिक्षा फैजाबाद में और इतिहास विषय लेकर उच्च शिक्षा इलाहाबाद और बनारस में हुई। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने वकालत की परीक्षा भी उत्तीर्ण की और कुछ दिन वकालत की भी। लेकिन उनका अध्ययनशील मन वकालत में नहीं रमा और 1921 में काशी विद्यापीठ में इतिहास के शिक्षक हो गए। उन्होंने इतिहास, पुरातत्व, धर्म, दर्शन, संस्कृति का गहन अध्ययन किया। हिंदी, संस्कृत, प्राकृत पाली, जर्मन, फ्रेंच और अंग्रेजी भाषाओं के ज्ञाता आचार्य जी का अध्ययन अत्यंत विशाल और अध्यापन शैली अत्यंत सरल थी।

ऐसा कहा जाता है कि आचार्य जी मूलतः शिक्षक थे। एक राजनेता की महत्वाकांक्षा और रणनीतिक कौशल उनमें नहीं था, न ही उन्होंने उस दिशा में अपनी प्रतिभा को लगाया। वे काशी विद्यापीठ में अध्यापन करने के बाद 1947 से 1951 तक लखनऊ विश्वविद्यालय के और 1951 से 1953 तक बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। उनका अपना जीवन सादगीपूर्ण था और वे गरीब छात्रों की आर्थिक मदद करते थे। छात्रों के साथ उनका रिश्ता बहुत ही प्रेरणादायी था। उनके शिष्यों में भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री, वरिष्ठ नेता कमलापति त्रिपाठी और सोशलिस्ट नेता चंद्रशेखर थे। चंद्रशेखर आचार्य जी की प्रेरणा से राजनीति में आए और अंत तक उन्हें अपना गुरु मानते रहे। एक अध्यापक, चिंतक और समाजवादी नेता के रूप में आजादी और राष्ट्र निर्माण में आचार्य जी का अप्रतिम योगदान है।

स्वस्थ रहने के आसान उपाय

1. सुबह जल्दी उठो और 4–य 6 किलोमीटर रोज टहलो। संभव हो तो शाम को भी थोड़ा टहलो।

2. टहलते समय नाक से लम्बी– लम्बी सांसें लो तथा यह भावना करो कि टहलने से आप अपने स्वास्थ्य को संवार रहे हैं।

3. टहलने के अलावा, दौडना, साइकिल चलाना, घुड़सवारी, तैरना या कोई भी खेलकूद, व्यायाम के अच्छे उपाय हैं। स्त्रियां चक्की पीसना,,रस्सीकूदना, पानी भरना, झाड़ू– पोछा लगाना आदि घर के कामों में भी अच्छा व्यायाम कर सकती हैं। रोज थोड़े समय छोटे बच्चों के साथ खेलना, 10– 15 मिनट खुलकर हंसना भी अच्छे व्यायाम के अंग हैं।

4. प्रातः टहलने के बाद भूख अच्छी लगती है। इस समय पौष्टिक पदार्थों का सेवन करें। अंकुरित अन्न, भीगी मूंगफली, आंवला या इससे बना कोई पदार्थ, संतरा या मौसम्मी का रस अच्छे नाश्ता का अंग होते हैं।

5. भोजन सादा करो एवं उसे प्रसाद रूप में ग्रहण करो, शांत, प्रसन्न और निश्चिन्तता पूर्वक करो और उसे अच्छी तरह चबाचबा कर खाओ। खाते समय न बात करो और न हंसो। एकाग्र चित्त होकर भोजन करना चाहिए।

6. भूख से कम खाओ अथवा आधा पेट खाओ, चौथाई पानी के लिए एवं चौथाई पेट हवा के लिए खाली छोड़ो।

राजस्थान दिवस

राजस्थान स्थापना दिवस प्रत्येक वर्ष 30 मार्च को मनाया जाता है। 30 मार्च, 1949 में जोधपुर, जयपुर, जैसलमेर और बीकानेर रियासतों का विलय होकर 'वृहत्तर राजस्थान संघ' बना था। यही राजस्थान की स्थापना का दिन माना जाता है।

राजस्थान की स्थापना

राजस्थान शब्द का अर्थ है– 'राजाओं का स्थान' क्योंकि यहां राजपूत, गुर्जर, मौर्य, जाट आदि जातियों ने पहले राज किया था। ब्रिटिश शासकों द्वारा भारत को आजाद करने की घोषणा करने के बाद जब सत्ता–हस्तांतरण की कार्यवाही शुरू की, तभी लग गया था कि आजाद भारत का राजस्थान प्रांत बनना और राजपूताना के तत्कालीन हिस्से का भारत में विलय एक दूभर कार्य साबित हो सकता है। आजादी की घोषणा के साथ ही राजपूताना के देशी रियासतों के मुखियाओं में स्वतंत्र राज्य में भी अपनी सत्ता बरकरार रखने की होड़ सी मच गयी थी, उस समय वर्तमान राजस्थान की भौगालिक स्थिति के नजरिये से देखें तो राजपूताना के इस भूभाग में कुल बाईस देशी रियासतें थी।

इनमें एक रियासत अजमेर मेरवाडा प्रांत को छोड़कर शेष देशी रियासतों पर देशी राजा महाराजाओं का ही राज था। अजमेर–मेरवाडा प्रांत पर ब्रिटिश शासकों का कब्जा था। इस कारण यह तो सीधे ही स्वतंत्र भारत में आ जाती, मगर शेष इक्कीस रियासतों का विलय होना यानि एकीकरण कर 'राजस्थान' नामक प्रांत बनाया जाना था। सत्ता की होड़ के चलते यह बड़ा ही दूभर लग रहा था क्योंकि इन देशी रियासतों के शासक अपनी रियासतों के स्वतंत्र भारत में विलय को दूसरी प्राथमिकता के रूप में देख रहे थे। उनकी मांग थी कि वे सालों से खुद अपने राज्यों का शासन चलाते आ रहे हैं, उन्हें इसका दीर्घकालीन अनुभव है, इस कारण उनकी रियासत को 'स्वतंत्र राज्य' का दर्जा दे दिया जाए। करीब एक दशक की ऊहापोह के बीच 18 मार्च 1948 को शुरू हुई राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया कुल सात चरणों में 1 नवंबर 1956 को पूरी हुई। इसमें भारत सरकार के तत्कालीन देशी रियासत और गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल और उनके सचिव वी. पी. मेनन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। इनकी सूझबूझ से ही राजस्थान के वर्तमान स्वरूप का निर्माण हो सका। पर्यटन विभाग राजस्थान स्थापना दिवस को सात दिवसीय फेस्टिवल के रूप में मनाएगा। इसके लिए राजस्थान दिवस सप्ताह का आयोजन किया जाएगा। इस फेस्टिवल के लिए विभागीय स्तर पर तैयारियां शुरू हो गई है। इस बार के फेस्टिवल में आमेर महल का नाइट टूरिज्म आकर्षण का केंद्र रहेगा।

इसके लिए पर्यटन विभाग की ओर से आमेर महल में नाइट टूरिज्म शुरू किया गया है। रात्रिकालीन पर्यटन के लिए आमेर महल में रंग–बिरंगी आकर्षक लाइटें लगाई गई हैं। पूरे महल परिसर में तीन रंगों की रोशनी फैलाने वाली लाइटें लगाई गई हैं। इन लाइटों से लाल, हरे और नीले रंग की मध्यम रोशनी निकलती है।

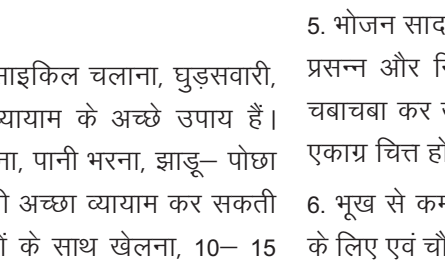

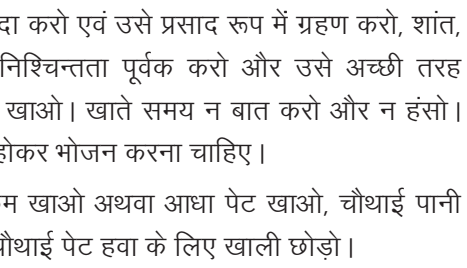

क्या आपश्री जानते है ?

'मोहन जोदड़ो से प्राप्त स्नानागार के मध्य स्थित स्नान कुण्ड की लम्बाई 11.88 मी., चौडाई 7.01 मी., एवं गहराई 2.43 मी. है।

'लोथल तथा कालीबंगा से अग्निकुण्ड प्राप्त हुए है।

' हड़प्पा की मोहरो पर सबसे अधिक एक सिंग वाले पशु का अंकन है।

'सिंधु सभ्यता की लिपि भाव चित्रात्मक है। यह लिपि दाँयी से बाँयी ओर तथा अगली पंक्ति में बाई से दाई ओर लिखी जाती है।

'सिंधु सभ्यता ऐतिहासिक एवं कास्य युगीन सभ्यता थी।

'सिंधु सभ्यता नगरीय सभ्यता थी। नगर की गलिया एवं सडके सीधी थी, तथा एक दूसरे को समकोण पर काटती थी।

'सिंधु सभ्यता के आवास कच्चे तथा पक्के दोनो प्रकार के थे । घरो के दरवाजे मुख्य सडक पर न खुल कर पिछवाडे गली में खुलते थे।

' हड़प्पा एवं मोहन जोदड़ो में **7 X 14 X 28** सेमी. की ईंटो की अधिकता है।

' मोहन जोदड़ो को मृतको का टीला कहा जाता है।

'काली बंगा का अर्थ काले रंग की चुडिया होता है।

' हड़प्पा सभ्यता का समाज मातृ सत्तात्मक था। खेती तथा पशु पालन मुख्य व्यवसाय थे। गेहूँ तथा जौ मुख्य फसले थी।

'चावल की खेती के साक्ष्य लोथल से प्राप्त हुए है।

'सैंधव निवासी शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनो प्रकार के भोजन ग्रहण करते थे। गेहू, जौ, दाल, दूध, दही, आदि मुख्य खाद्य पदार्थ थे।

'सिंधु सभ्यता के लोग मनोरंजन के लिये नृत्य–संगीत , शिकार आदि का प्रयोग करते थे।

' हड़प्पा में शवो को दफनाने, एवं मोहन जोदड़ो में शवो को जलाने की प्रथा थी।

मानव मन के बोल

कर्म ही पूजा है

गतांक से आगे.....

उस समय 6 रूपया टी.ए.डी.ए. मिलता था, बहुत प्यारा लगता था 6 रूपया। और आठ दिन के लिये जायेंगे तो 48 रूपये मिलेंगे। कमला जी को कहा – कमला जी बहुत गुणी, बहुत सद्भावी, बहुत आज्ञा पालन करने वाली, सद्चरित्र। कमला जी उस समय सिलाई करती थी। क्योंकि पीहर में गोपी–किशन जी की रेडिमेंट कपड़ों की दुकान थी, उनकी हमारे पर बहुत कृपा है। उन्होंने कमला जी को छोटेपन से ही सिलाई सिखवा दी थी। ये सिलाई स्कूल में भी गई थी। कपड़े बनाने में एक्स्पर्ट हाथ की मशीन थी उस समय। हमारे पास पैसा भी बहुत कम था। मशीन खरीदनी पड़ती है पैर की मशीन के पैसे भी ज्यादा लगते है। तो हाथ की मशीन को माथे पर लिया, उस समय कल्पना की मैंने अंगुली पकड़ी, प्रशान्त को गोद में लिया। एक–दो बैग चारों तरफ लगाये। और हम रोहट चले गये। जहां पर खूब आनन्द से प्रेम पूर्वक कार्य किया। प्रेमपूर्वक कार्य करने में खूब आनन्द आता है। आज भी आनन्द आता है। कार्य तो पूजा है।

''कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करही सो तस फल चाखा।।''

कर्म करते रहिये :– ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन'' फल तो मिलेगा, परन्तु फल के लिये कर्म मत कीजिये। फल जो भी मिले–मंजूर कीजिये। कर्म बहुत अच्छी तरीके से कीजिये। फल तो मिलेगा ही, क्या मिले ये भगवान के हाथ में। कभी बहुत अच्छा करते है। फिर भी तकलीफ हो जाती है।

कभी बहुत नालायकी करते है, फिर भी माला पहनाते है। साहब आये, साहब आये। साहब अन्दर से कैसे मालूम नहीं? साहब तो साहब है माला पहनाई जा रही है। साहब मन में सोच रहे है कि मैं तो बहुत नालायक हूँ। पर देखो माला पहनने को मिल रही है। कभी –कभी व्यक्ति के पाप खुद के अन्दर ही रहते है। कई पाप तो ऐसे होते है। जो व्यक्ति स्वयं ही जानता है कि मैंने पाप किया। आगे उस पाप को मत कीजिये।

क्रमश अगले अंक में ...

सम्पादकीय

इंसान वही जो दूसरे इंसान के काम आए। यूं कहने को तो पूरी दुनियाँ इंसानों से भरी पड़ी है, मगर यदि हममें मानवीय संवेदनाएँ नहीं, तो फिर हम मानव कहलाने के अधिकारी कैसे ? हमारे घर में मोमबत्ती अवश्य पड़ी रहती है, जिसे हम बिजली गुल हो जाने पर अक्सर जलाया करते हैं। मोमबत्ती के भीतर एक धागा होता है, जो स्वयं जलकर हमें प्रकाश देता है। जब धागा जलता है तो मोम पिघलकर..... द्रवीभूत होकर उसका सम्पूर्ण साथ देते–देते अपना सर्वस्व समर्पित कर देता है। आखिर कितनी करुणा है बेजान धागे और निर्जीव मोम में..... अपने साथी रहे जलते धागे का साथ देने को मोम का रोम–रोम जल उठता है। फिर हम तो सजीव और प्राणी जगत के हिस्से हैं, हममें तो जिन्दा दिल धड़कता है। भला हम अपनी मानवीय संवेदनाएँ कैसे खो सकते हैं, इंसानियत को कैसे भूल सकते हैं? करुणा और प्रेम से ही हमारे समाज एवं राष्ट्र में बड़े पैमाने पर भामाशाहों द्वारा दुःखियों, पीड़ितों, असहायों, वृद्धों, मासूम विकलांग बच्चों एवं निर्धन लाचारों की सेवा–सहायता हेतु दान–सहयोग दिया जा रहा है। दान देने वाले जिस भावना से दान देते हैं, वैसा ही फल उन्हें मिलता है। आध्यात्मिक महर्षियों ने मनुष्य के लिए दान की महत्ता अनेक कारणों से स्वीकार की है। इसका मुख्य कारण यह है कि इस संसार में मनुष्य ही एक ऐसा जीव है जिसके पास विवेक है। इस कारण वह अपनी आवश्यकताओं से अधिक संग्रह करता है। कुछ लोगों के अधिक संग्रह कर लेने से समाज का एक हिस्सा ऐसा भी रह जाता है जिनकी भौतिक उपलब्धियाँ कम रह जाती है। एक संग्रह करता है तो दूसरा अभाव झेलता है। इससे समाज में वैमनस्य का भाव भी फैलता है। यही कारण है कि अधिक धन वालों को हमेशा ही दान कर समाज में अपना प्रभाव बढ़ाने के साथ ही आध्यात्मिक शांति के साथ जीवन व्यतीत करने की राय दी जाती है।

नारायण सेवा संस्थान के अन्तर्गत किये गये नियमित नि:शुल्क दिव्यांग ऑपरेशन की सूची

क्रं.स.	रोगी का नाम	पिता/पति का नाम	उम्र	लिंग	शहर	राज्य
1.	गौरेश जोशी	संदेश	9	पुरूष	ठाणे	महाराष्ट्र
2.	मोईनुददीन	अमीरूददीन मोहम्मद	9	पुरूष	मधुबनी	बिहार
3.	विपिन कुमार	विनोद कुमार	9	पुरूष	जौनपुर	उत्तरप्रदेश
4.	बिश्मीता	महेशवर	10	स्त्री	नलबरी	असम
5.	शाकिब तेली	भूरा तेली	11	पुरूष	सहारनपुर	उत्तरप्रदेश
6.	टकलू कुमार	शंकर यादव	12	पुरूष	जमुई	बिहार
7.	आयुष कुमार	राजीव गुप्ता	20	पुरूष	दिल्ली	न्यू दिल्ली
8.	सौरभ कुशवाह	ओमप्रकाश	24	पुरूष	कन्नौज	उत्तरप्रदेश
9.	सीमा बेगम	साबिर अली	25	स्त्री	ईलाहाबाद	उत्तरप्रदेश
10.	अयान कुरैशी	नफीस	4	पुरूष	दिल्ली	न्यू दिल्ली
11.	रमेश	सॉवलाराम	6	पुरूष	जालौर	राजस्थान
12.	राजकुमार	सतीश	7	पुरूष	वाराणसी	उत्तरप्रदेश

क्रमशः

मेघालय पर्यटन स्थल

शिलॉन्ग, मेघालयः मेघालय का अर्थ है बादलों का घर। यहां आकर जीवन की हर चिंता समाप्त हो जाती है। मेघालय की राजधानी शिलॉन्ग भारत का सबसे खूबसूरत हिल स्टेशन है। इसे पूर्व का स्कॉटलैंड कहा जाता है। शिलॉन्ग में पूरी दुनिया का सबसे ऊंचा वॉटरफॉल है जिसे देखने दनियाभर से लोग आते हैं। खूबसूरत खासी पहाड़ियों के बीच बसा यह स्थान भारत के प्रसिद्ध ब्लूस मैन, लाउ मैजॉ (सिंगर और गिटारिस्ट) का घर भी है।

शिलॉन्ग में अनेक दर्शनीय स्थल है जैसे एलीफेंटा फॉल, शिलॉन्ग व्यू पॉइंट, लेडी हैदरी पार्क, वार्ड्स लेक, गोल्फ फोर्स, संग्रहालय, कैथोलिक, केथेड्रल,

आर्चरी और एंगलीकेन सिमेंटरी चर्च।

चेरापूंजी का स्थानीय और आधिकारिक नाम सोहरा है जो शिलॉन्ग से 56 किलो मीटर की दूरी पर है। यह खासी पहाड़ी के दक्षिणी किनारें पर स्थित एक छोटा सा कस्बा है। चेरापूंजी 12 महीने ही घनी बारिश के कारण विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। चेरापूंजी के कुछ महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल हैं माकडॉक–डिमपेप घाटी का दृश्य जो शिलॉन्ग और चेरापूंजी के बीच स्थित है, सोहरा बाजार और रामकृष्ण का मंदिर, संग्रहालय, नोखालीकाई जल प्रापत, प्रथम प्री साइबेरियन चर्च, वेल्श मिशनरियों की दरगाहें, एंगलिकन सिमेंटरी, इको पार्क डबल डेकर रुट ब्रीज, चेरापूंजी मौसम विज्ञान वेधशाला।

शिलॉन्ग से 35 किलोमीटर दूर अमरोही में हवाई अड्डा है। दिल्ली से 1490 किलोमीटर दूर है शिलॉन्ग।

गिरिराज मंदिर-गोवर्धन धाम

मथुरा और वृन्दावन में भगवान श्री कृष्ण से जुडे अनेक धार्मिक स्थल है। किसी एक का स्मरण करों तो दूसरे का ध्यान स्वतरू ही आ जाता है। मथुरा के इन्हीं मुख्य धार्मिक स्थलों में गिरिराज धाम का नाम आता है सभी प्राचीन शास्त्रों में गोवर्धन पर्वत की महिमा का वर्णन किया गया है।

गोवर्धन का महत्व – गोवर्धन के महत्व का वर्णन करते हुए कहा गया है। कि गोवर्धन पर्वत गोकुल पर मुकुट में जडी मणि के समान चमकता रहता है।

गिरिराज जी के अंगों की विभिन्न स्थितियां बताई गई है। जहाँ गोवर्धन पर रास में श्री राधा ने श्रृंगार धारण किया था, वह स्थान "श्रंगारमंडल" के नाम से प्रसिद्ध है। श्रंगारमंडल के अधोभाग में श्री गोवर्धन का 'मुख' है, जहाँ पर भगवान ने व्रज वासियों के साथ अन्नकूट का उत्सव किया था।

'मानसीगंगा' गोवर्धन के दोनों 'नेत्र' है, 'चन्द्रसरोवर' 'नासिका', 'गोविंदकुण्ड' 'अधर' , और 'श्रीकृष्ण कुण्ड' 'चिबुक' है,'राधाकुंड' गोवर्धन की 'जिव्हा' , और ललिता सरोवर 'कपोल' है। गोपाल कुण्ड 'कान' और कुसुम सरोवर 'कर्णान्तभाग' है। जिस शिला पर मुकुट का चिन्ह है उसे गिरिराज का 'ललाट' कहते है। चित्रशिला उनका 'मस्तक' और वादिनी–शिला उनकी 'ग्रीवा' है। कंदुक तीर्थ उनका 'पार्श्व भाग' है। और उष्णीष–तीर्थ को उनका 'कटि प्रदेश' बतलाया जाता है।

द्रोंण–तीर्थ 'पृष्ठ देश' में और लौकिक–तीर्थ 'पेट' में है। कदम्ब–खंड 'हदय–स्थल' में है। श्रृंगारमंडल तीर्थ उनकी 'जीवात्मा' है श्री कृष्ण चरण–चिन्ह महात्मा गोवर्धन का 'मन' है। हस्तचिन्ह तीर्थ 'बुद्धि' और ऐरावत चरण–चिन्ह उनका 'चरण' है। सुरभि के चरण चिन्हों में महात्मा गोवर्धन के 'पंख' है। पुच्छ–कुण्ड में 'पूंछ' की भावना की जाति है। वत्स–कुण्ड में उनका 'बल', रूद्र कुण्ड में 'क्रोध' और इंद्र सरोवर में 'काम' की स्थिति है। इस प्रकार गिरिराज जी के ये विभिन्न अंग है।

जो समस्त पापों को हर लेने वाले है। जो नर श्रेष्ठ गिरिराज जी की इन विभूति को सुनता है वह योगी दुर्लभ 'गोलोक' नामक परम धाम में जाता है।

गिरिराज मंदिर कथा – गिरिराज मंदिर के विषय में पौराणिक मान्यता है, कि श्री गिरिराज को हनुमान जी उतराखंड से ला रहे थे उसी समय एक आकाशवाणी सुनकर वे पर्वत को ब्रज में स्थापित कर दक्षिण की और भगवान श्री राम के पास लौट गये थे। इन्हीं मान्यताओं के अनुसार भगवान श्री कृष्ण के समय में यह स्थान प्राकृतिक सौन्दर्य से भरा रहता था. यहां अनेक गुफाएं होने का उल्लेख किया गया है।

गोवर्धन धाम कथा – गोवर्धन धाम से जुडी एक अन्य कथा के अनुसार गोकुल में इन्द्र देव की पूजा के स्थान पर गौ और प्रकृति की पूजा का संदेश देने के लिये इस पर्वत को अंगूली पर उठा लिया था. कथा में उल्लेख है, कि भगवान श्री कृष्ण ने इन्द्र की परम्परागत पूजा बन्द कर गोवर्धन की पूजा ब्रज में की थी।

ब्रज में प्रत्येक वर्ष इन्द्र देव की पूजा का प्रचलन था इस पूजा पर ब्रज के लोग अत्यधिक व्यय करते थें. जो वहां के निवासियों के सामर्थ्य से कहीं अधिक होता था. यह देख कर भगनान श्रीकृष्ण ने सभी गांव वालों से कहा कि इन्द्र पूजा के स्थान पर जो वस्तुएं हमें जीवन देती है। भोजन देती है। उन वस्तुओं की पूजा करनी चाहिए।

भगवान श्रीकृष्ण की बात मानकर ब्रज के लोगों ने उस वर्ष देव इन्द्र की पूजा करने के स्थान पर पालतु पशुओ, सुर्य, वायु, जल और खेती के साधनों की पूजा की। इस बात से इन्द्र देव नाराज हो गएं। और नाराज होकर उन्होनें ब्रज में भयंकर वर्षा की। इससे सारा ब्रज जल से मग्न हो गया। सभी दौडते हुए भगवान श्रीकृष्ण के पास आयें और इस प्रकोप से बचने की प्रार्थना की. भगवान श्री कृष्ण ने उस समय गोवर्धन पर्वत अपनी अंगूली पर उठाकर ब्रजवासियों की रक्षा की थी। उसी दिन से गिरिराज धाम की पूजा और परिक्रमा करने से विशेष पुन्य की प्राप्ति होती है। गिरिराज महाराज के दर्शन कलयुग में सतयुग के दर्शन करने के समान सुख देते है। यहां अनेक शिलाएं है। उन शिलाओं का प्रत्येक खास अवसर पर श्रंगार किया जाता है। करोडों श्रद्वालु यहां इस श्रंगार और गोवर्धन के दर्शनों के लिये आते है। गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा कर पूजा करने से मांगी हुई मन्नतें पूरी होती है। जो व्यक्ति 11 एकादशियों को नियमित रुप से गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा करता है। उसे मनोवांछित वस्तु की प्राप्ति होती है।

यहां के मंदिरों में न कोई पुजारी है, तथा न ही कोई प्रबन्धक है। फिर भी सभी कार्य बिना किसी बाधा के पूरे होते है। यहां के एक चबूतरे पर विराजमान गिरिराज महाराज की शिला बेहद दर्शनीय है। इसके दर्शनों के लिये भारी संख्या में श्रद्वालु जुटते है। महाराज गिरिराज की शिला को अधिक से अधिक सजाने की यहां श्रद्वालुओं में होड रहती है। श्रंगार पर हजारों–या लाखों नहीं बल्कि करोडों रुपये लगाये जाते है। यहां की वार्षिक सजावट का व्यय किसी बडे मंदिर में चढावे की धनराशि से अधिक होता है। यहां साल में चार बार विशेष श्रंगार ओर छप्पन भोग लगाया जाता है।

सत्संग
चैनल पर सीधा प्रसारण

सादर आमंत्रण

अपंग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध, वंचितजनों एवं विमन्दितों की सेवा में सतत् सेवारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

सहायतार्थ

श्रीमद् भागवत कथा

आयोजक

भागवत कथा रसिक सत्संग मण्डल, गंजबासौदा

दिनांक एवं समय
7 से 13 अप्रेल 2016
दोपहर 3 बजे से सांय 6.30 बजे तक

स्थान :काशी गार्डन महाराणाप्रताप चौक,
न्यू बस स्टैण्ड बरेठ रोड़, गंजबासौदा, जिला- विदिशा (म.प्र.)

कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमेन
नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कथा व्यासः पुज्य श्री प्रमेहानन्द जी महाराज

व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान करायेंगे। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।

कथा व्यास
पूज्य प्रमेहानन्द जी
महाराज

प्रशान्त अग्रवाल
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

स्थानीय सम्पर्क सूत्रः 9893804333, 9098995883
संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999

:: 'निःशक्तजन' की सेवा-सहयोग के प्रति समर्पित ::

कैलाश ''मानव''
मैनेजिंग ट्रस्टी एवं संस्थापक
नारायण सेवा संस्थान

कमला देवी
कोषाध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान

प्रशान्त अग्रवाल
अध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान

वन्दना
निदेशक
नारायण सेवा संस्थान

जगदीश आर्य
ट्रस्टी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान

देवेन्द्र चौबीसा
ट्रस्टी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान

भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी
कृपया सपरिवार अवश्य पधारें ।

मुट्ठी में तकदीर हमारी

गतांक से आगे.....

तन का सुतंत्र खुशियों का मंत्र

रक्तदान की घटना... पाचन तंत्र

कैसे–कैसे? बोले, आपके अन्दर क्रोध रूपी चांडाल आ गया, आपके अन्दर क्रोध रूपी राक्षस आ गया। आपके अन्दर क्रोध रूपी पूतना आ गई, लंकिनी आ गई, ये शुर्पणखा आ गई। ये मारीच आ गया, ये क्रोध रूपी रावण आ गया, ये अभिमान रूपी दुःशासन आ गया, ये दुर्योधन आ गया। मुझे तो चार बार स्नान करना पडेगा।

बाबूडा भूलिग्या या छोटी जात और उजली जात कई वे?एक जात है मानव की। गुरू ग्रन्थ साहिब में कहा मानुस जात एक हैं, एक नर है, एक नारी है। नर और नारी की जात ही भगवान ने बनायी है।

खून चाहिये तो पूछते नहीं हैं। एक बार ऐसा हुआ महाराज, एक किन्ही व्यक्ति को ब्लड की जरूरत पड गई। उसके पहले वाले जाति–पांति मानते थे। इनके हाथ का भोजन नहीं करेंगे। इनका स्पर्श नहीं होना चाहिये, ये छोटा है, मैं बडा हूँ। इस तरह की नालायकी की बातें थी, और जब ब्लड की जरूरत पड़ी। तो हमारे में से किसी ने कहा– अरे, किसी का भी हो, अरे जल्दी लाओ, अभी क्यों बात कर रहे हो?किसी जाति का भी हो, आप तो जल्दी लाओ। हमारे प्राण बचने चाहिये, क्यों भाई?अबे आप रो कटे ग्यो भेदभाव? जब जीव पर आया तो सारी बातें समाप्त करते हैं, अरे इतने स्वार्थी हो गये?

ये करोड़ों–करोड़ों, अरबों ऊत्तक मिल गये और एक लीवर का अंग बन गया। लीवर अपने आप में तंत्र नहीं है, ये पाचन तंत्र का एक भाग है। अभी आपने देखा, लीवर ट्रांसप्लांट होता है। एक लीवर का, भगवान ने ऐसी कृपा की है महाराज कि पाँचवा हिस्सा भी, ये समझ लीजिये, लीवर का पाँचवा हिस्सा भी जब तक रहता है, तब तक हृदय धड़कता रहता है सहस्त्रार चक्र का मस्तिष्क चलता रहता है, विशुद्धि चक्र का कंठ काम करता रहता है, अनाहत चक्र का हृदय धड़क–धड़क करता रहता है। परन्तु शराब पीने वाले इतने निर्मम होते है, अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारते है।

शर्म की बात है–ये, इतनी भी अक्ल नहीं। भाइयों कहाँ खो गए? इस शराब ने आपके लीवर को खराब कर दिया, इस व्यसन ने आपके लीवर को डैमेज कर दिया, इन पान–मसालों ने आपके लीवर को क्षतिग्रस्त कर दिया, सिरोसिस हो गया। कहते है, लीवर बढ़ गया, लीवर सिकुड़ गया। लीवर से रसायन नहीं निकलते ।

पाचन तंत्र के इस बडे भाग की रक्षा कीजिये। बोलिये गणेश भगवान की जय।

इस लीवर को अच्छा रखने के लिये, शराब छोड़नी पड़ेगी, व्यसन को छोड़ेंगे, जीवन को बढ़िया मोड़ेंगे, शराब बड़ी खराब है।

नशा नाश का द्वार है, मत करना कोई। नशा नाश का द्वार है और ये फूट क्या होती है? अरे फूट तो घर ने तोड़ी देवे। कहते हैं, विचारों की भिन्नता है। धीरे–धीरे विचारों की भिन्नता होते हुए कर्मो की भिन्नता होने लगी और कर्मो की भिन्नता होते–होते दुनियादारी में सब गड़बड़ होने लगता है। जिन भाइयों को मैंने देखा है कि, लोग उदाहरण देते थे।

दाँत कटी रोटी, मतलब दोनों भाई एक ग्रास को आधा–आधा खुद के मुंह में देते थे। दाँत कटी रोटी भाइयों में दुश्मनियाँ हो गई। इसलिये हमारे घासीराम जी ने कहा –

फूट रांड रो करो करियावर,
प्रेम चोखलो नूतो रे।
सेवा री गाडी में भाया,
बलद वणिने जुतो रे।।

बलद वणिने ने जुतो रे, सेवा री गाडी में। भाया ये सेवा री गाडी आपके हृदय में है।

क्रमश :

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सलायक प्रबन्धक–सोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एम.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com